तैरते दीप
सुरेन्द्र 'नूतन'

आपसे मिलिए

हिन्दी रचना क्षेत्र में कविवर 'सुरेन्द्र नूतन' अब अपने परिचय के मुहताज नही है। पिछले पांच दशकों से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कृतियाँ प्रकाशित होती रही हैं। आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रो से समय-समय पर उनकी कविताएं प्रसारित होती रही है। हिन्दी कवि सम्मेलनों में उनकी ख्याति रही है।

सन् 1932 में इलाहाबाद जनपद के फूलपुर कस्बे में एक समृद्ध कायस्थ परिवार में सुरेन्द्र नाथ का जन्म हुआ। उनकी शिक्षा फूलपुर, लखनऊ तथा उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्व विद्यालय में हुई और अन्त में हिन्दी साहित्य सम्मेलन से साहित्य रत्न की उपाधि अर्जित की। उसी समय आप विश्वविद्यालय बालीबाल टीम के कप्तान बने और कालान्तर में प्रदेश तथा देश का प्रतिनिधित्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया।

साहित्य की ओर अपने चाचा "अमर वर्मा' व बुआ श्रीमती विद्यावती "कोकिल' की प्रेरणा से आकर्षित हुए और वर्ष 1958 में स्नेहलता "स्नेह" की ननद श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव जो स्वयं एक सशक्त कवियत्री है के साथ परिणयसूत्र में बंधे। नूतन जी ने अपने विद्यार्थी जीवन से ही दैनिक "आवाज" और "वर्तिका" से जुड़ गये थे। इनका काव्य संग्रह "मधूलिका' 1992 में तथा अमेरिका निवास में लिखित खंड काव्य "झलकारी" वर्ष 1995-96 में प्रकाशित हो चुके हैं जो हिन्दी जगत में काफी चर्चित रहे हैं।

उच्च प्रशासनिक पद से अवकाश लेकर अब प्रयाग में साहित्य सेवा में रत हैं।

तैरते दीप

(काव्य संग्रह)

सुरेन्द्र नाथ 'नूतन'

अतुल प्रकाशन

इलाहाबाद

Ta rathe Deep
(Collection of Poems)
By
Surendra Nath 'Nutan'

लेखक : सुरेन्द्र नाथ 'नूतन'

प्रकाशक : अतुल प्रकाशन
3, बी.के. बनर्जी मार्ग,
नया कटरा, इलाहाबाद-2

आवरण : राधेश्याम अग्रवाल

कम्पोजिंग : कॉम्पटेक ग्राफिक्स, इलाहाबाद

मुद्रक : अमर मुद्रणालय, इलाहाबाद

संस्करण : प्रथम, 2000

मूल्य : 60 रुपये

प्रस्तावना

हिन्दी कविता को प्रतिभावान एवं अनुभूतिशील व्यक्तियों ने समय समय पर काल, परिस्थिति के अनुसार परिभाषित किया है परन्तु इन सारी विचार धाराओं में एक आर्य सत्य रहा है और वह यह कि काव्य मानव संवेदनाओं की सूक्ष्मतम् अभिव्यक्ति करता रहा है। काव्य मनुष्य जीवन के अनुभव को सुन्दर रूपों में प्रकट करने का सशक्त माध्यम रहा है। कवि अपने युग की वास्तविकता को भी अनदेखा नहीं करता। उसकी वाणी में असंख्य पाठक अपनी भावनाओं और विचारों का प्रतिविम्ब पाते हैं। उसकी रचना में अपने जीवन अनुभव को एक नये रूप में देखने का प्रयास करते हैं। अतः काव्य जीवन का अनुकरण है उसका निरूपण है। काव्य हमें जीवन का मर्म समझाने मे सहायक होता है। जीवन के प्रति वह सहस्त्र दृष्टियाँ रख सकता है, उसमे आस्था अथवा अनास्था प्रकट कर सकता है। अतः हम देखते हैं कि हर युग में महान काव्य ने शिष्ट और शिक्षित वर्ग की परिधि को पार करके असख्य जनता का स्नेह और सम्मान प्राप्त किया है। गहरी अनुभूति से ही काव्य के पाठक का मन द्रवित, विचलित और व्यथित होता है। भाषा-शिल्प, उपमाएं, संगीत आदि काव्य के साधन मात्र हो सकते हैं वे काव्य के अलंकार हो सकते हैं, साध्य नहीं। उत्कृष्ट काव्य प्राण-रस मानवीय अनुभूति, गहरी संवेदना तथा मानव जीवन का मर्मस्पर्शी निरूपण की अभिव्यक्ति करता ही दृष्टिगोचर होता है। पाश्चात्य काव्य का अन्धे अनुकरण में अनेक कवि प्रतीको की नवीनता तथा शब्दों के जोड को सर्वस्य समझ रहे हैं इन शब्दों और प्रतीकों का महत्व तभी हो सकता है, जव इनके पीछे स्वस्थ मानवीय अनुभूति हो तथा जीवन को एक दृष्टि प्रदान करने की क्षमता हो जो जीवन को सासारिक दुखों से मुक्त दिला कर उसे आनन्द और शान्ति का मार्ग दिखाने की शक्ति रखे। शब्दों का आडम्बर और नया कुछ करने की धुन शव को अलंकृत करने के समान है। भाषा-सौष्ठव, संगीत ताल-लय की चतुराई, अलंकारों की अभिनव कारीगरी, पच्चीकारी मीनाकारी अन्ततः उन पर काव्य का सौन्दर्य निर्भर नही करता। श्रेष्ठ काव्य का निर्णय अन्ततः इस बात पर निर्भर होता है कि कवि ने कितनी गहरी जीवन दृष्टि पाई है।

इंग्लैण्ड में नये रूपों और प्रयोगों की खोज में 'जेम्स जौयस' ने लिखना छोड़ दिया था। वह स्वप्नों के समान अथवा कालकूट पीने के बाद शिवजी के समान भाषा का प्रयोग करने लगा था डी एच लॉरेन्स भी

अपने साहित्य मे इसी प्रकार के प्रयोग करने लगा था। मानो अनिर्वचनीय शून्यता को स्वर देना चाहते हों। इसी प्रकार की मानसिक उलझनों ने भारतीय कवियों को भी घेर रखा है और वह अपने काव्य को वादों के घेरे में बाँधने के प्रयास में तल्लीन दिखाई पड़ते हैं। वह मानो अपनी काव्यात्मक अनुभूति के साधनों को तोड़ने और अपने काव्य रूपों को विकृत और विरूप करने में कटिबद्ध हैं। ऐसा प्रयोग हिन्दी में निरर्थक सिद्ध हो रहे हैं और उनका नाता पाठक से टूटता जा रहा है यह सूर और तुलसी की लोकप्रियता से स्पष्ट है। हिन्दी कविता की सब से बलवती धारा आज भी व्यक्ति और समाज के विकास हेतु संतुलित कविता की धारा है। इस धारा के पीछे व्यक्ति और लोक कल्याण की चिर काल से चलती आयी भारतीय परम्परा का उत्तराधिकार है। गहरी जीवन दृष्टि चित्रमय भाषा और गीत का निर्झर हिन्दी कविता की विशेषता रही है।

समस्त पूर्व आग्रहों तथा वादों की सीमा से अलग हट कर "तैरते दीप" में कविताएं अपने रसिक पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत हैं। आशा है कि यह रचनायें अपने सुधी पाठकों की आशा के अनुरूप उतर सकेंगी। और अपने जीवन को आनन्दमय व प्रेममय बनाने के लिये एक दृष्टि प्रदान कर सकेंगी।

सुरेन्द्र 'नूतन'
21 पार्क रोड,
इलाहाबाद

रचना क्रम

वंदना

हर पल है तेरा ही वंदन
साँस-साँस करती अभिनन्दन

तेरा आँचल शोभित नन्दन
लता, फूल गुम्फित वृन्दावन
हर डाली गमके ज्यों चन्दन
धरती का आलोकित कन-कन

उस्वासों से तेरा अर्चन
हर पल है तेरा ही वंदन

सरसों के फूलों सा कन कन
बौराये मन का पागलपन
अमराई की चूड़ी खन-खन
भौंरे गा कर करते गुंजन

शत-शत तेरा है अभिरंजन
साँस-साँस करती अभिनन्दन

□

मुक्तक

(1)

जिन्दगी की परिधि निराली है
विष भरी स्वर्ण की यह प्याली है।
कल्पना जितना भी चाहे उड़ान भर ले यहाँ
अन्त में दोनों हाथ खाली है।।

(2)

चाँद के साथ मेरी रात रही
चाँदनी थी मेरे तन मन मे बसी।
उठ रही थी तरंग मन में बहुत
किन्तु ओठों नें न कुछ बात कही।।

(3)

कुछ मुखौटे भले नहीं लगते
पाँव उठकर उधर नहीं उठते।
यह तो मारीच के ही वंशज हैं
स्वर्ण-मृग बनके सब को हैं छलते।।

(4)

लिफाफा तो बहुत अच्छा है लेकिन खत में क्या होगा
बड़ी मीठी है बोली, किन्तु इसके मन में क्या होगा।
कलाबाज़ी तो अब युग-धर्म बनती जा रही यारों
अगर प्रारम्भ ऐसा है तो सोचो अन्त क्या होगा।

(5)

दीपक जल नहीं सकते, अगर बाती नहीं होती
भरे संसार में दुख से बड़ी थाती नहीं होती।
बदलते वक्त के फौलाद से, जो टूट गिर जाये
उसे कुछ और कह लो- किन्तु वह छाती नही होती।।

(6)

सुबह से शाम तक हम सब यही व्यापार करते हैं
खुशी के वास्ते हम उलझनों से प्यार करते हैं।
बड़ी मेहनत से कितने वर्ष में यह नर्क जोड़ा है
मगर क्यों अन्त में रहने से हम इन्कार करते हैं?

(7)

हम चले जाते हैं अक्सर उस जगह सोते हुए
जहाँ से आये थे माँ की गोद में रोते हुए।
हो गयी थी भूल शायद, कोई बस प्रारम्भ में
थक गये हम भार जिसका आज तक ढोते हुए।।

(8)

यह सरासर झूठ, कि जीवन दुखों की खान है
यह हमारी दृष्टि का भ्रम है, गलत पहचान है।
बरसता आनन्द है उन्मुक्त हर पल छिन यहाँ
किन्तु अनुभव मिट गया मेरा यही व्यवधान है।।

(9)

खो गया सब कुछ कहाँ अब सोच मानव
क्यों जरूरत पड़ गई अब वन्दगी की।
एक सस्ता सा कफन, पीले से फूल
क्या कमाई है यही बस जिन्दगी की।।

(10)

उदासी के बहुत छोटे से घेरे से निकलने को
न जाने कितने रंगों से घरौंदों को सजाया है।
हजारों बार दस्तक दे, खुशी के घर से लौटा मैं
मगर कुछ भाग्य ऐसा था कि केवल दुख ही पाया है।।

(11)

धूप ऐसी है,जिसे देखी न जाय
बात ऐसी है जिसे बोली न जाय।

स्वर्ग वालो तुम्हें मालूम क्या है
यह धरा ऐसी, जिसे झेली न जाय।।

(12)

यहाँ आवाज कुछ ऐसी है जो जानी सी लगती है
कुछ ऐसी आकृति है जो कि पहिचानी सी लगती है।
मगर एक सन्त सी काया मेरे सपनों में आती है
जो जानी सी भी लगती है व अनजानी भी लगती है।।

(13)

क्या कम है कि तुम मेरा अनादर नहीं करते
वरना यहाँ तो लोग हैं क्या क्या नहीं करते?
दुनिया के इस बाजार में यदि ध्यान से देखो
नकली हैं जो सिक्के वही पहले यहाँ चलते।

(14)

यह बजते दमदमी हर रोज तेरे यश के नक्कारे
कहाँ ले जा रहे हैं सोच तेरे कृत्य ये सारे।
यही वह इन्द्र-धनुषी जाल है जो सब मिटाता है
खड़ा करके अहम् को अन्त में मातम कराता है।।

(15)

मैंने उस दीवार पर सम्पूर्ण अपना घर बनाया है
कि जो दीवार बस दो चार दिन में गिरने वाली है।
पड़ोसी सब यहाँ पीकर नशे में धुत बैठे हैं
सुराही ऐसी जो भरने से पहले स्वयं खाली है।।

(16)

जिन्दगी खर्च हो रही तो क्या
मौत यदि फायदे में है तो क्या?
मैं तो चौराहे पर आ बैठा हूँ।
धूप बरसात रात हो तो क्या

(17)

जुगनू के चमकने से अँधेरा छट नहीं सकता
ऊँगलियों के इशारे से यह बादल फट नही सकता।
अगर है आँख तो इस ज्योति को पंजे से न नापो
यह ऐसा सत्य है जो जिन्दगी से हट नहीं सकता।।

(18)

भटकने को बहुत आसार मेरी जिन्दगी में है
मगर विश्वास की एक ढाल मेरी जिन्दगी में है।
नहीं टूटेगी भावों की कमानी कितना भी खींचो
अभी जीने का एक आधार मेरी जिन्दगी में है।।

(19)

यहॉ शब्दों के सीधे अर्थ भी समझे नहीं जाते
उसासों की ललक आपस में जुड़ने भी नहीं पाते।
भला भावों की गहराई का क्या अन्दाज हो जग को
विरह के दर्द के आकार जब घटने नहीं पाते।।

□

(गीत)

जब अकेलापन तुम्हे भाने लगे
जिन्दगी उत्सव मना गाने लगे।
तब समझ लेना कि आयेगा कोई
साँस में मधुगन्ध जब छाने लगे।।

चमचमाते चाँद के आँचल तले
छोड़कर पतवार नय्या बह चले।
भार, तिनके सा भी मन पर न रहे
पाँव की आहट तुम्हें हर पल मिले।।

तब समझ लेना कि आयेगा कोई
जब मयूरी नाच कर गाने लगे।

भैरवी गाती हुई पुरवा चले
टेसुओं के गाल पर लाली पले।
शीत झरनों का मुखर संगीत ऐसे
जैसे घुंघरू बाँध कर गोरी चले।।

तब समझ लेना कि आयेगा कोई
दूर से अनुगूँज जब आने लगे

एक ज्वाला में विगल सब कुछ जले
चेतना का प्राण को संवल मिले।
स्वप्न खो जाये अजाने शून्य में
एक उन्मादी हवा ऐसी चले।।

तब समझ लेना कि आयेगा कोई
रूप का प्रारूप जब खोने लगे।।

□

(गीत)

इतनी पीड़ा असह वेदना, फिर भी नयन नहीं गीले हैं
इतनी वर्षा इतना आतप, फिर भी पात नहीं पीले हैं।।

रात की काली परछाई में –
भोर की किरण छिपी होती है।
दुख के चक्रव्यूह में भी तो
सुख की लहर दबी होती है।।
पतझड़ पास खड़ा है फिर भी
वृक्ष झूम कर लहराते – हैं।
काँटों की शैय्या पर अकसर
फूल समुज्ज्वल खिल जाते है।।

इतनी घुटन भरी जकड़न है फिर भी दिशा नहीं भूले हैं
इतनी वर्षा इतनी आतप फिर भी पात नहीं पीले हैं।

सागर के आवेश में अक्सर
ज्वार इधर आते जाते हैं।
दृढ़ निश्चय मन फिर भी उसके
सीपी में मोती पाते हैं।।

कितनी भी मजबूत सृष्टि हो
उल्कापात हुआ करता है।
कितना भी संयत जीवन हो।
पर आघात सहा करता है।।

जीवन और मरण के तट पर मैंने त्रास बहुत झेले हैं।
इतनी वर्षा इतना आतप फिर भी पात नहीं पीले हैं।

□

(गीत)

धूमकेतु सा विचरण करता मैं नीले आकाश में
शायद मैं भी टूट के आया हूँ सूरज के पास से।

पूरा जगत लग रहा जैसे हो गोला आकार
धूमिल धूमिल सा था पहले, अब है यह साकार।
बावन हूँ मै क्या दो पग में इसको नाप सकूँगा।।
या असीम हो, इसकी सीमा का परित्राण करूँगा।

सारे ही नक्षत्र विकम्पित मेरे दिव्य प्रकाश से
शायद मैं भी टूट के आया हूँ सूरज के पास से

युगों युगों तक की है तपस्या, तब मैं सृष्टि में आया
देख के मेरा रूप न जाने क्यों जग है घबराया।
मैं अनिष्टकारी हो सकता यदि कोई कुदृष्टि पड़ेगी
वरना गति या यति में अन्तिम परिणति मुझे मिलेगी

सीखो मुझसे बनना मिटना, क्यों जीते हो त्रास में
शायद मैं भी टूट के आया हूँ सूरज के पास से।

इस ब्रह्माण्ड में मैं हूँ अकेला, केवल यह आकाश है
न तो कुछ भी दूर है मुझसे न कुछ मेरे पास है
तूफानी सी गति है मेरी, तूफानी है - भाषा
धूल, धुआँ, शीतल-कण मिलकर बनती है परिभाषा।

जैसे गहन वेदना उतरी हो गहरे उच्छवास से
शायद मैं भी टूट के आया हूँ सूरज के पास से।

□

गीत)

आ पखेरु प्यार के सौरभ यहाँ बोने लगे
आम में जब से बौर आये शगुन होने लगे

गन्ध का व्यपार चल निकला सलोने गॉव में
बाँसुरी बजने लगी पीपल की ठन्ढी छाँव में।
डाकिया आने की हर क्षण बाट जोही जा रही
मौन आमंत्रण छिपा है गोरियों की बाँह में।

चाँदनी आतुर खड़ी है वस्त्र उज्जवल श्वेत में
रूप छलका पड़ रहा है पौर आँगन खेत में
रतजगा हाने लगा है चातकों के गाँव में
नूपुरों की खनक है अब गोरियों के पाँव में।

द्वार से ऋतुराज के गाने के स्वर आने लगे
आम में जब से बौर आये शगुन होने लगे

रात के अंतिम पहर में हिल रही पर-छाइयां
फूलों के पीछे खड़ी ज्यों मौन सी अमराईयाँ।
गीत के माहौल में जादू है यूँ छाया हुआ
जैसे कि हर छोर से बजने लगे शहनाइयाँ।।

थोड़ी सी गरमी लिए मधुमास की ठन्ढी हवा
बांटती फिरती है तितली सी फुदक कर शोखियाँ।
हूक सी मन में जगाती कूक कर कोयल यहां
एक उत्सव सी मनाती लग रही हैं बस्तियाँ।

झाँझ, डफ़ करताल के संगीत हैं भाने लगे।
आम में जब से बौर आये शगुन होने लगे।।

□

गीत

बूँद-बूँद आसुओं की लड़ी बह गयी
नैनों के कोने में नींद अड़ गयी

जो ठन्डी थी, कोमल वह हवा वह गयी
जीवन की धूप चिलचिला के अड़ गयी

प्यार में यह नाप तौल लेके क्या करूँ
जब भावना से भरी हुई तरी बह गयी

एक भी चिराग उजाले को वहुत है
जब सूर्य से मिली हुई सौगात बंट गयी

मेंहदी से नाम लिखा, लिख के धो दिया
हल्की सी फिर भी कुछ पहिचान रह गयी।

हीरा तो काटता ही है शीशे को मेरे दोस्त
पर चोट जो तुमने है दी, वरदान बन गयी

मुझको तो है गुमान तुम्हारी बिसात पर
यह दर्द बेल अन्त में परवान चढ़ गयी।

□

गीत

:रसती आग, तपती धूप में जो साँस लेते हैं
उन्हे सब भूल कर लपटों में जीना सीखना होगा।

जिसे कुछ दूर पर तूफ़ान छिप कर देखते होंगे
छलकते रक्त की सौगात उनसे माँगते होंगे
कड़कती बिजलियाँ सुनसान में स्वागत को बैठी है
खड़े चट्टान जिसके लक्ष्य को बढ़ रोकते होंगे।।

समय की मार से जो टूट कर खामोश बैठे हैं
उन्ही में फिर नया विश्वास हमको बाँटना होगा।।

यह फौलादी इरादे से गरजता सामने सागर
हवा हुँकारती सी पूछती उसका पता हर घर।
संजोये कंटकों का थाल मग में अड़चनें बैठी
बहाने को बढ़ाकर हाथ, बढ़ते उस तरफ निर्झर।।

सहारा एक तिनके का भी जिनसे छिन गया होगा
उन्ही के घाव पर मरहम लगाना सीखना होगा।।

अगर साहस है तो संघर्ष करना सीखना होगा
हो सम्मुख यदि विकट तूफान उसको झेलना होगा।
ठिठुरती काँपती सी शीत-लहरी यदि उसे घेरे
तो सीना खोल कर उसको भी बढ़कर चूमना होगा।

मुसीबत में पड़े इन्सान जो घबरा गये खुद से
उन्ही के दीप को फिर से जलाना सीखना होगा।

□

गीत)

रात खामोश है तारों ने सताया होगा
चॉद ने ओट से छिप छिप के बुलाया होगा।

धड़कने कुछ भी कहें बात सुहानी तो हैं
साँस बहकी रहे पर ऑख में पानी तो है।
पँख फैलाये हुए मन का मोर न नाचे
रेत पर फिर भी बनीकोई निशानी तो है।।

बाल खोले हुए बदरी ने रुलाया होगा
चॉद ने ओट से छिप छिप के बुलाया होगा।।

प्रेम के गाँव से यह रूठ चली आयी है।,
घास पर अनगिनत मोती भी बिछा आयी है।
फिर भी अटका हुआ है मन उसी अनजाने में
जिसको वह छोड़ चली आयी है वीराने में।।

उलझनों ने नया आकार बनाया होगा
रात खामोश है तारों ने रुलाया होगा।

क्या करें, क्या न करें मन वही पर बसता है
छोड़ आई जिसे कल आज वही खलता है।
यह तो वह दर्द है जिसकी कोई पहचान नहीं
वह गड़ा तीर है जिसका कोई संधान नहीं।।

हो विकल प्यार का संगीत रचाया होगा
चाँद ने ओट से छिपछिप के बुलाया होगा।।

□

(गीत)

जो भी होना है यहाँ, होगा वही
क्यों दुखी हो देखकर अपनी बही।

चहचहाती भोर हँसती शाम
जिन्दगी चलती रहे अविराम
गीत झरनों से झरे झर झर निरंतर
चाँदनी फैली रहे अभिराम

मन में हो मकरन्द की खुशबू बसी
क्यों दुखी हो देख कर अपनी बही।

नित्य तारों से सजे दीपावली
जुगनुओं की दीप माला हर गली
मन मंदिर उल्लास में डूबा रहे
कुंज में जैसे खिली कोमल कली

बात लहरों सी रही कुछ अनकही
क्यों दुखी हो देख कर अपनी बही

प्रेम-गंधी फूल की हो टोलियाँ
नटखटी पायल करे अटखेलियाँ।
बादलों के साथ जो ब्याहे गये थे
उन झकोरो की मधुर हो बोलियाँ।।

सौ विवादों से विलग सरिता वही
क्यों दुखी हो देख कर अपनी बही

बाह्य-गामी कर्म का यह खेल है
न हुआ तुमसे तुम्हारा मेल है।
बोझ छाती पर उठाये मत चलो
क्यों समझते जिन्दगी बस जेल है।।

देख उठकर सामने राहें नयी
क्यों दुखी हो देखकर अपनी बही।।

□

(गीत)

संबंधों का सेतु आज तो बाँध लिया मैंने
किन्तु प्रेम की धार नदी में सूखी लगती है।।

साँसों में स्मृति के कितने सुमन छिपाये थे
आँखों की अंजुरी में भर मोती ले आये थे।
प्राणों का नैवेद्य सजा थाली भर लाये थे
गाकर दीपक राग ज्योति झिलमिल फैलाये थे।।

सपनों का काजल आँखों में आँज लिया मैंने
किन्तु चाँदनी मदमाती भी रूखी लगती है।

यह चन्दनी-बयार मलय के झोंकों सी निर्मल
रचती श्वेत पटल पर तेरा चित्र मधुर अविरल।
भौरों के गुंजन सा गाकर अर्घ्य चढ़ाया था
जो कुछ मेरा था वह सब अर्पण कर आया था।

रेशम की चूनर सजधज कर ओढ़ लिया मैंने।
किन्तु हाथ की मेंहँदी भी अब फीकी लगती है।।

बादल सा उड़ कर मैं चाहूँ इन्द्र धनुष छूना
पल पल तेरी छाया में ही मन चाहे जीना।
संकेतों की भाषा में तुम लिख पाती भेजो
डगमग, डगमग जब पग मेरे तुम सम्बल देना।।

सुख दुख की गठरी तो कस कर बाँध लिया मैंने
किन्तु डोर की गाँठ अभी कुछ ढीली लगती है।।

☐

(गीत)

सप्त ऋषी नभ में बैठे हैं देख रहे ध्रुवतारा
जग वालों के नैनों मे बहती आँसू की धारा।

दुख से मन का रेचन कर दें ऐसी दिशा तो होगी
जीवन को जो कुसुमित करदे ऐसी ऋचा तो होगी।
कब तक अंधी दौड़ चलेगी, मन में त्रास पलेगा
धर्म, अधर्म को लेकर तर्कों में संवाद चलेगा।।

क्या अब तक अवसन्न पड़े हो देते नहीं सहारा
सप्त ऋषी नभ पर बैठे हैं देख रहे ध्रुवतारा

प्रज्ञावान तुम्हें सब कहते तुम अकाम हो ऋषि हो
क्यो अमृत सब अँश तुम्हारे, मेरे अँश में विष हो
दर दर मैं कब तक भटकू, अपना भाग्य टटोलूँ
क्यों न अन्तर खोल के मैं उसमें तुमकों बैठालूँ

मौन शान्त होकर जब मैं बैठूँ, छूटे एक फव्वारा
सप्त ऋषी नभ पर बैठे हैं देख रहे ध्रुवतारा

तुम खगोल के आदि सन्त हो, वीतराग सन्यासी
हम सब नश्वर जग के प्राणी केवल एक प्रवासी
क्षणभंगुर है जीवन मेरा पर कुछ अर्थ तो होगा
सरिता में तिरते-तिरते क्या सागर में गर्त भी होगा

हाथ सुमिरिनी लिए घूमता गॉव गॉव बन्जारा
सप्त ऋषी नभ पर बैठें है देख रहे ध्रुवतारा।

□

गीत

कल रात जिन्दगी से यह अनुवंध हो गया
वह द्वार जो भरमा रहा था वन्द हो गया

वर्षों मे मैं आवारा वना फिरता रहा था
यदि पाँव थक गये तो मन चलता रहा था
सरिता की लहर गिनके गुजारे थे वहुत दिन
तट पर खड़ा मैं नाव को लखता ही रहा था

जो कन्ट में गरल था वह मकरन्द हो गया
वह द्वार जो भरमा रहा था वन्द हो गया

जव भी वढ़े चरण तो तूफान खड़े थे–
उस ओर गई राह तो पाषाण अड़े थे
गिन गिन कर साँस। उम्र यह आधी बिता दिया
थे पांव जहाँ कल वहीं फिर आंज खड़े थे

था अटपटा जो शब्द वह अब छन्द हो गया
कल रात जिन्दगी से यह अनुवंध हो गया

उन्मुक्त प्रेम का यहाँ जव से तना वितान
दिन रात का प्रत्येक क्षण अब हो गया महान
अव तक तो जो सूनी पड़ी थी मौन बाँसुरी
वह छेड़ने लगी है अव मधुर, मदिर तान

जीवन के पोर-पोर में अव सुगन्ध भर गया
वह द्वार दो भरमा रहा था वन्द हो गया।

□

(गीत)

हथौड़े से गरम लोहे पर ऐसी चोट मत मारो
कि चिन्गारी जो निकले वह तुम्हें ही भस्म कर डाले।

यह था फौलाद का बेटा
इसे भी तुमने न छोड़ा।
तपा कर भट्टी में हर दिन
जिधर चाहा उधर मोड़ा।।
न इसके दर्प को समझा
न इससे नाता ही जोड़ा।
पिघलता ही गया यह
धीरे-धीरे थोड़ा ही थोड़ा

सहन की एक सीमा है इसे तुम ठीक से समझो
कहीं यह उग्र होकर धौंकनी को फोड़ न डाले

यह माना तुम बहुत मजबूत हो
मजबूत सा तन— है।
तपिश से तुम न झुलसोगे
बहुत मजबूत सा मन है।।
मगर फिर भी तो ये काया है
आखिर मोम की काया
कहीं भी टूट सकता है
यह जो साँसों का बंधन है

ये अंगारे हैं, अंगारे से इतनी दूर पर ठहरो
जला दे यह न दोनों हाथ, और पड़ जाय न छाले।

□

(गीत,

ये सागर का निमंत्रण है या नदियों ने बुलाया है।
यह तट पर मौन आकर किसने दीपों को बहाया है।।

यह जो प्रतिबिम्ब है जल में
वही तो जग में झंकृति है।
अगर तुम ध्यान से देखो
वहीं अन्तर में अंकित है।।

यह जो दृग-जाल है या भ्रम, इसे तुम तोड़कर देखो।
यह जो कमरन्द-विखग है, कदाचित उसकी छाया है।।

शिखाएं दीप में काँपी
तो अन्तर-जल भी कांपा है।
किरण क्यों बेधती जल को
इसे कब किसने आँका है?

यही संवाद का क्षण है अगर हो मौन तुम देखो।
यह जो आनन्द झरता है उसी की विपुल काया है।।

वही आभा कि जो आकाश के
तारों में बसती है।
वही आ प्राणियों के नयन के
कोरों में पलती है।

यह बड़वानल जो सागर के हृदय की अमित थाती है
समूची सृष्टि को, बन चेतना हर पल चलाती है
यहीं सब कुछ निकट तो है जिसे था होश पाया है।
ये सागर का निमंत्रण है या नदियों ने बुलाया है।

□

गीत)

रात भर आँख खोले मैं गिनता रहा
फिर भी तारे अभी अन-गिने रह गये।

दीप जितने सँजोये थे पथ में तेरे
उनमें आधे अभी अध-जले रह गये।।

साँझ के झुटपुटे में विरह आ गयी
याद शैतान आ मुझको डसने लगी।
क्रन्दनों की दिशाहीन आवाज थी
साँस के तार पर टीस बजने लगी।।

मंजरी बाग में तो गमकती रही –
फॉस मन में चुभे अन बिने रह गये।।

आस्थाओं से मेरी न तू डगमगा
तेरी आँखों में अव भी मदिर जाल है।
जिसकी भाषा न अव तक कभी पढ़ सके
उसमें विधि ने हमारा लिखा भाल है।।

नागफनियों ने पीछा किया जब कभी
सेज के शूल भी अनचुने रह गये

शब्दों के झुरमुट ये भावों की माला
विना मूल्य ही मेरा घर बेच डाला।
सुवासित हवाओं में मैं झूमता हूँ
अजव सा नशा है गजब की है हाला

ये संगीत जो सृष्टि में प्रतिध्वनित
उनके स्वर, ताल, लय अनसुने रह गये।

□

(गीत)

दो सांसों के बीच में फैला यह विस्तार
एक साँस मरघट को जाती, दूजी चन्दन-द्वार।

यही खिलौने की दुनिया है स्वप्नों का संसार
इसी एक छोटे से घर में चलता सब व्यापार।
दूर कहीं हो रही मुनादी, रहो सभी होशियार
पाँच चोर हैं साथ तुम्हारे जो पक्के वटमार।।

तट पर खड़ा खड़ा मैं देखूँ विधि का यह व्यवहार
एक लहर तट पर रह जाती, दूजी जमुना पार।।

प्रेम, दया, करुणा, ममता का यहाँ गड़ा भंडार
खोद, खोद कर हम सब हारे जाने कितनी बार।
दूर कहीं एक तारा टूटा, करता गया गुहार
जिस जग की तुम पूजा करते, वह जग है निस्सार।।

छत पर खड़ा हुआ भ्रम पाले, देख रहा लाचार
एक लहर पनघट को जाती दूजी घट के पार

मरघट के पीछे का घर यह फिर भी है गुलजार
सुख की फुलवारी के पीछे, दुख का है अम्बार।
चीख यहाँ सरगम बन जाती साजों की झंकार
किन्तु यहाँ खो रही वारुणी कलुषित कर रसधार।।

क्या खोलूँ क्या बाँधे रखूँ, मन पर अतिशय भार
एक किरण खुशियाँ दे जाती, दूजी हाहाकार।

□

(गीत)

प्रतिबन्धों ने मुझपर इतने प्रतिबन्ध लगाये हैं
संबंधों की भाषा ही हम पढ़ना भूल गये।।

मरुथल में है भटक रहा, प्यासा, प्यासा सा मन
मुरछित हो रह गया कहीं पीछे बोझिल सा तन।
बड़ा भयानक सन्नाटा है दिशा,दिशा उन्मन
उहापोह में छूट गया हाँथों से वृन्दावन।।

जीवन ने पथ पर इतने काँटे बिखराये हैं
कि सच मानों तो अब हम उनकों चुनना भूल गये।

सोने का यह मृग प्यारा है, प्यारी पतिव्रता
मैं किसके पीछे भागूँ मन तू ही मुझे बता।
नारी की अस्मिता खड़ी है कहती व्यथा कथा
आज द्रोपदी दाँव लगी फिर उत्तर मुझे बता।।

समवेदन ऐसा बिखरा है अनुगूँजन खोकर
बजती है वीणा लेकिन हम सुनना भूल गये।।

पिंजड़े में हम तुम बन्दी हैं, द्वार पड़ा ताला
अब तक इसे न खोल सके हम लाख जपी माला।
दहक रही है उर में मेरे केवल यह ज्वाला
पी न सका तेरी दुनिया में मैं तेरा प्याला।।

मौसम ने कानन में यूँ उत्पात मचाया है
कि मुक्त गगन में पँख पखेरू उड़ना भूल गये।

□

(गीत)

कहाँ जाये किधर जाँये अंधेरा है घना तम है
दिशायें खो रही सारी, मेरे युग का यही गम है

बदलती आस्थाएं, टूटते विश्वास हैं सम्मुख
यह कैसी झुलसती सी धूप मेरी ओर है उन्मुख
बदलती दृष्टि व परिवेश, यह संक्रान्ति क्या कहना
यहाँ जो कुछ भी होता है, उसी को देख चुप रहना

जहाँ चाहों गणित कर लो, मगर उत्तर सदा भ्रम है
कहाँ जायें किधर जायें अँधेरा है घना तम है

अँधेरे रास्ते पर हर कोई बस भागा जाता है
न आगे से न पीछे से किसी का कोई नाता है।
यह अंधी-दौड़ सब को लेके आखिर कहाँ जायेगी
नये से चक्र में फँस यह कदाचित ठहर जायेगी।।

जहाँ चाहो खुशी लिखलो, मगर हर मन में मातम है
दिशाएं खो रही सारी मेरे युग का यही गम है

यहाँ जीवन की कुछ पहचान यदि अवशेष रह पायी
तो उसके न हृदय होगा न मस्तक और न तरुणाई
बस इसका अस्थि-पंजर खन्डहरों में ढूँढ़ा जायेगा
कभी रहता था क्या मानव यही तब पूछा जायेगा

यही सब सोचकर नव-जात शिशु की आँख भी नम है
कहाँ जाँये, किधर जाये, अँधेरा है घना तम है।

□

गीत)

आ गये फिर झूमते उजबेग से बादल
छेड़ते हर द्वार पर है प्यार की मादल

यह पुराने मीत के कानों में कुछ कहने
आ गये पहने हुए चाँदी के कुछ गहने।
जब कपोलों पर लगे कुछ प्यार से लिखने
भाव के अतिरेक में आँसू लगे बहने।।

यह मदन के बाण से रहते सदा घायल
आ गये फिर झूमते उजबेग से बादल

जब विरह की आग में तन मन लगा जलने
छोड़कर प्यासी धरा ऊपर लगे उठने
दामिनी से जब लगे अठखेलियाँ करने
प्यार की सौगात में मोती लगे झरने

घुँघरुओं से युक्त पग में बज उठी पायल
आ गये फिर झूमते उज़बेग से बादल

यह चुभन पहले छुवन की जल लगा बहने
सिसकियों को रोक मन में यह लगे हँसने।
हाथ में मेंहदी रचाने का यतन करने
तोड़ कर पाषाण अब झरने लगे गिरने।।

केश कुन्तल को बिखेरे घूमते पागल
आ गये फिर झूमते उजबेग से बादल।

□

गीत

इस घटाटोप अंधेरे में कोई दीप जले
रात में सिर्फ उजाले की यहाँ बात चले

हर तरफ नर्क के आँखों का है काजल फैला
धर्म के नाम पर हर व्यक्ति का आँचल मैला।
दूर तक रश्मि के शावक का कोई ज्ञान नहीं
झूट और सच में किसी को कोई पहचान नहीं।

ऐसे रौरव में कोई दामिनी का तीर तले
इस घटा-टोप अँधेरे में कोई दीप जले

झूठ का राज्य किसी आस्था का भास नहीं
जितनी चलती है उसमें अपनी कोई साँस नहीं।
लड़खड़ाते हैं चरण, दूर है मंजिल इतनी
हर कदम ठोकरें खाती सी जिन्दगी जितनी

ऐसे नैराश्य के घेरे में कोई ज्योति जले
इस घटा-टोप अँधेरे में कोई दीप जले

ज्योति का पर्व है, दीपों से उसकी मांग सजे
अब सपेरों को जगाने को यहाँ बीन बजे।
अपना कुछ दर्प हो, कुछ ज्ञान हो विश्वास पले
इस नटी युग के कुचक्रों से न हम जायें छले।

साहसी हाथ में फिर से कोई मशाल जले
इस घटा-टोप अंधेरे में कोई दीप जले।

□

(गीत)

चोटों का संसार अलग है यह तन न जाने
साँसों की झंकार अलग है यह मन न माने

तेरे प्रेम की वड़ी सूक्ष्म पतली सी परिभाषा है
जहाँ न कोई सुख न दुख, केवल प्राणी प्यासा है
चक्रवात की गति हैं लाखों तारे चमक रहे हैं
सुमन डाल पर खिलकर अनगिन अविरल महक रहे हैं

मुखरित हो संगीत जहाँ लगता गीतों को गाने
साँसों की झंकार अलग है यह मन न माने

नासापुट बन जाये बाँसुरी, जीवन हो मधु-शाला
पल छिन वरस रही हो मदिरा नैन पिये बन प्याला
अन्तर में बस बहे त्रिवेणी द्वार बिछे मृग छाला
अंजुरी भर भर कर मैं पी लूँ तेरी बहती हाला

लहरों के कल कल निनाद को क्या पाषाणी जाने
साँसों की झंकार अलग है यह मन न माने

माटी का घर, गहरा पनघट, रूप, लाज मुख प्यारा
जब तुम सम्मुख होते हो तो मिटजाता है सारा
एक छुवन पीछे रह जाती बहती रस की धारा
जोगी गाँव गाँव फिरता है लेकर बस एक तारा

पंख खोल उड़ने का सुख बन्दी पंक्षी क्या जाने
चोटों का संसार अलग है यह तन न जाने।।

□

(गीत)

छलकी तेरे नयन से हाला
मैंने इन्द्र धनुष रच डाला

कन कन है तेरा ही दर्पण
केवड़े की सुगन्ध सा तन मन।
लहराता सा तेरा यौवन
शरद चाँदनी सा भोलापन।

तेरा ही अमृत पीने को
मैंने सारा जग मथ डाला
छलकी तेरे नयन से हाला

प्रथम किरण की पहली थिरकन
पंखुड़ियों में कोमल सिहरन।
तुम सितार की झंकृति लय हो
प्रथम प्रणय की पहली धड़कन।।

तेरा एक चित्र रचने को
मैंने सारा रँग भर डाला
छलकी तेरे नयन से हाला।

किंचित यह उद्गार हमारे
दस्तक दे दें द्वार तुम्हारे
जीवन चाहे जो रंग बदले
रहना हरपल साथ हमारे

तेरी एक झलक पाने को
कितने विष-प्याले पी डाला
छलकी तेरे नयन से हाला।

□

(गीत

चाँद तुम नभ में आये बहुत देर से
देखो मौसम यह ऋतुएं बदलने लगीं
चाँदनी भी बिखेरी, मगर देर से
देखो सागर में लहरे तड़पने लगी हैं।

रो पड़ी हैं बिचारी यह जलकुंभियाँ
इस कुमुदिनी का अवसाद में क्या कहूँ?
सारे तारे विकम्पित हो जल में गये
निर्झरों का व्यथित-नाद मैं क्या कहूँ?

रात विधवा सदृश है खड़ी छाँव में
ओस आँसू बहाती सिसकने लगी
चाँद तुम नभ में आये......

जब से तुम आये सारा जगत खिल गया
वाटिका ही नहीं सारा तरू लद गया।
मुस्कराती सी सरिता ठुमुक चल पड़ी
शंख, सीपी व मोती से तट पट गया

तुमने नभ को नयी ज्योति से भर दिया
चेतना मुक्त हो गीत रचने लगी
देखो मौसम यह ऋतुएँ बदलने लगी

मै वहाँ हूँ जहाँ जगमगी रात है
विजलियाँ कौंधती, तेरी बरसात है।
फूल इतने खिले, सारा घर सज गया
रेशमी है ऊषा, मखमली प्रात है।।

एक ऐसी अलौकिक बजी बाँसुरी
मेरी कुन्ठाएं सारी पिघलने लगी।
चाँद तुम ....

□

(गीत,

चलती है पीछे पीछे परछाई मेरी
और सामने जीवन का आकार खड़ा है।
एक चेतना रहती हरपल पास हमारे
और दूसरी में सारा संसार अड़ा है।।

यह परिभाषित क्षण जिसमें तुम लुकछिप आते
जीवन के हर समीकरण को बदल रहा है।
ऊपर, ऊपर, शान्त, शान्त सा नीरव नीरव
पर अन्तर में सब कुछ जैसे उबल रहा है।।

जीवन में प्रश्नों का काला फन फैलाये
जहरीला सा नाग यहाँ हर रोज खड़ा है
और सामने जीवन ....

प्रतिकारों की आँख मिचौली साँझ सबेरे
चुम्बक का आकर्षण क्या कुछ कम होता है।
जितनी भी सुगन्ध फूलों में रची बसी हो
किन्तु चाह की अर्थी तो हर मन ढोता है।।

अष्ट-धातिया आशा के चौकोर फ्रेम में
युग युग से संचित सारा विश्वास जड़ा है।

मात्र तुल्य इस भुवाकार प्रतिमा के उर तक
बौने ही आपा खोकर आते-जाते हैं।
लहराते हर ओर जलाशय के अन्तर में
दावानल की आँच यहाँ बिरले पाते हैं।।

जिस पथ से सौ बार अहर्निश हम गुजरें है
वहीं पुनः आकर मेरा इतिहास खड़ा है।।
चलती ही पीछे-पीछे परछाई मेरी
और सामने जीवन का आकार खड़ा है।

□

गीत)

खुले हुए है द्वार और वातायन सारे
तुम वसंत की बन सुगन्ध इस घर में आओ।

पीली सरसों फूल रही है खेत खेत में
बगिया में है गमक रही पागल अमराई।
कोयल गाकर डाल डाल पर स्वागत करती।
पनघट पर रुन-झुन, रुन-झुन बज रही कलाई।।

देख रहे हैं वृक्ष राह पर बौराये से
ऊषा किरण जल में जा बैठी है शरमाई।
घूँघट है उठ रहा प्रेम की प्रतिमाओं का
छली जा रही फूलों की बेसुध तरुणाई।

उन्मेलित पलकों पर सौ सपने उपजाती
तुम मकरन्द बिखेर द्वार साँकल खनकाओ
तुम बसन्त की ....

मदमाती ऋतु में हो सतरंगी बातें
अम्बर पर बस सजी रहें चाँदी की रातें।
झर झर निर्झर बरस रहा संगीत निरन्तर
मिटा जा रहा, हर क्षण मेरा तेरा अन्तर।।

अभिवादन करने को कलियाँ झूम रही है
परदेसी भौरों का श्री मुख चूम रही हैं।
उनको याद आ रहीं अब वह अल्हड़ बातें
महकी महकी बेसुध सी अलसाई रातें।।

आँखों में आँसू की इन टूटी लड़ियों को
हाथों से छूकर इनका संताप मिटाओ।

□

(गीत

खिल गये फूल हैं साँसों में गमकने वाले
चाँदनी रात में बाहों में मचलने वाले

रूप और गन्ध की चर्चा है सभी डालों पर
भौंरे कुछ प्यार से लिखने लगे हैं गालों पर
मस्त झोंकों में यह उड़ते हुए काले बादल
धर दिया प्यार का एक हाथ उसके बालों पर

बावरे हो रहे नैन छलकने वाले
चाँदनी रात में बाहों में मचलने वाले

जैसे मकरन्द की प्याली में पिपासा छलके
वैसे ही झील के पानी में इसका तन झलके
मौन ही मौन रहे आँखों से सब बात करे
मौन तोड़े तो इसके ओठ से हाला टपके

उसके अभिसार को व्याकुल है तड़पने वाले
चाँदनी रात में बाहों में मचलने वाले।

□

(गीत)

वह दिन थे जब पेड़ों के संग हम भी झूमा करते थे
फूस की कुटिया में बैठे हम घंटो बाते करते थे

झूलों पर बेसुध तुम गाती
छिप छिप अक्सर मुझे बुलातीं
बादल की चूनर ओढ़े तुम
तितली सी फुर सी उड़ जाती

वह जंगल, वह वन, घर आँगन
सारा का सारा तेरा था
मधुर चाँदनी, वंशी की धुन
चन्दन सा बस मन मेरा था

तिथि त्योहारों को ऊँगली पर बैठे हम गिना करते थे
फूस की कुटिया में बैठे हम घंटों बाते करते थे

गर्मी में छत पे लेटे हम
कितने तारे गिन डाले थे।
बीर-बहूटी ला बाहर से
हमने शीशी में पाले थे।

कितनी बार मौन ध्रुवतारा
मैंने तुमको दिखलाया था।
जब जब बही मधुर फगुनहटी
तुमने निकट मुझे पाया था।

इन्द्रधनुष आँखों में रचकर हम जाने क्या क्या करते थे
फूस की कुटिया में बैठे हम घंटों बातें करते थे।

□

(गीत)

दरीचे खोल दो कमरे में किरणें आने वाली है

बहुत सोये, बहुत खोये
मगर अब जाग भी जाओ।
मचलती रश्मि सूरज की
उठो तुम आ के खो जाओ।

मधुर संगीत का जादू
जगाने चिड़िया आयी हैं
नुकीले चोंच में थामें
कोई पाती भी लाई हैं

ऊषा अब झुटपुटे में लाल चादर लाने वाली हैं
दरीचे खोल दो कमरे में किरणें आने वाली हैं

यह देखो चाँद तारे
दुम दबा कर भागे जाते हैं।
जो सारी रात अपने नाम का
डंका बजाते हैं

बरफ ने छत्र चाँदी का
पहाड़ों को चढ़ाया है।
नये नेवेद्य से धरती के
आँगन को सजाया है।

पुरोहित जग गया है आरती छवि छाने वाली है
दरीचे खोल दो कमरे में किरणें आने वाली हैं।

□

गीत)

चमक उठे जुगनू जब बीच कभी रात में
भीग गये आँखों के सपने बरसात में

परियों के घर बादल उड़ चले सावन में
नाच उठे मोर पंख खोल मेरे आंगन में।
बूंदों की जरीदार चूनर को लख लख कर
अटक रहा मन आज अपने मनभावन में।।

सांसों की वीणा पर गीत नये उग आये
मीठी-मीठी तेरी रसवन्ती बात में।।

पगलाये से बादल गाँव गाँव घूम रहे
कजरारे नैनों को देख देख झूम रहे।
पनघट पर गोरी है खड़ी हुई खोयी सी
कुन्तल उड़-उड़ कर उसके गालों को चूम रहे।।

पलकों पर आँसू की कनियाँ है बिखरी यूं
ज्यों मोती की सेज सजे पुरइन के पात में।

सौगन्धों की लिपियाँ बँधी हुई धागों में
व्याकुल सा तन मन है बँटा कई भागों में।
पीड़ा का दर्प, फँसी नागफनी में ऊँगली
सोया सोया सा मैं आज सभी जागों में

कस्तूरी महक रही आँचल के पीछे यूँ
जैसे मादक सुगन्ध बसी पारिजात में।

□

(गीत

लजवन्ती आँखों मे मत अपना प्रतिविम्ब निहारो
कहीं ओठ पे फूल न झर कर पानी में बह जाये।

तुम निर्झर की उच्छास हो या हो गंगा जल
भागीरथी, अलखनन्दा में बहती हो कल कल
गुलमोहरों ने बड़े चाव से तुम्हें अंक में पाला
हरसिंगार झर-झर कर डाले तेरे गले में माला

तुम दर्पण के सम्मुख हो न अपना रूप संवारो
कहीं रूप की नगरी में न कोलाहल मच जाये

बकुल-पंखिया पंछी उड़कर, हिमवन से हैं आते
तेरी नय्या पर ही उड़ उड़ कर हैं वह मन्डराते
लहरे उमग रहीं हैं तेरे नरम पाँव छूने को
सारा गाँव खड़ा है जल में चरणामृत पाने को

केसर व चन्दन का उबटन तन में तुम न लगाओ
कहीं बाग में भटक रही मधुगन्ध बिखर न जाये

मधुर-प्रेम बन रही है पूजा रूप तेरा कल्याणी
शब्द निःशब्द हुए अब मेरे मूक हो गई वाणी
सभी तुम्हारे द्वारा खड़े हैं ज्ञानी या अज्ञानी
घूँघट उठा के जादू कर दे तू अक्षय वरदानी

बादल की डोली में बैठी इतना न शरमाओ
कहीं धरा पर फिर से न चातक प्यासा रह जाये।

□

कविता

बन्द हुए सब द्वार
जीने का न कोई आधार
तब सोचा,
राजनीति का करूँ व्यापार।
शीघ्र ही चल निकला यह धन्धा
क्योंकि समाज पूजता है उसे
जो लूटता है इसे बनाकर अंधा।
एक रात जब छाया था सन्नाटा
उठा भयंकर ज्वार भाँटा,
देखा तो दृश्य था भयावा
अपराधी हो गया था फरार
करके एक कन्या का बलात्कार
लोगों ने मुझसे कहा, देखिए यह अत्याचार
ठग रहा वही जिस पर रक्षा का है भार
मैंने कहा,
इसकी इज़्ज़त की न खींचिए कमान
आप सब चुप रहिए श्रीमान
इंच मात्र न घबराइये
बस मेरे साथ नारे लगाइये
अपने को इस तरह बचा लिया यार
साथ ही किया पतिता उद्धार

× × ×

कुछ माफिया, कुछ काले धन स्वामी
जो दिलाते थे वोट
और देते थे सलामी
आये एक शाम
चलने लगे जाम पर जाम
बोले कुछ हमारा भी सोचिए

सत्ता मे हमारा भी वृक्ष गपिये
मैंने उन्हें धीगे से समझाया
अभी वक्त नही आया
पहले युवा शक्ति का करो आह्वान
तव तुम्हारी ओर जायेगा ध्यान
जव छात्र करते रहेंगे हडताल
और एक कक्षा में लगाएंगे पाँच साल
तो जनता जाल मे फँम जायेगी
तव मैं शक्ति बढ़ाऊँगा
और आपको सत्ता का अङ्ग वनाऊँगा।
जव मैं समझा ग्हा था
यह तिकड़म-वाजी
एक नव युवक न हुआ हमसे राजी
बोला बहुत हुआ
अब संभल जाइये
ऐसी राजनीति न हमें समझाइये
यह मुखौटा अव न चल पायेगा
जनता के पावों तले रौंद दिया जायेगा
देश की धारा से कट जाओगे
और हर कदम पर मुँह की तुम खाओगे
सुन लीजिए मेरी वात
हो गम्भीर
वरना जनता एक दिन देगी
तुम्हें चीर, तुम्हें चीर।

□

कविता

काली हड्डी,
सफेद खून की संतान
कल कैसी बनायेगी पहचान?
अणु-युग का यह अविष्कार
करेगा बड़े-बड़े चमत्कार और
कदाचित संभव न होगा
इसका प्रतिकार।
इसके हाथ केवल धन के लिए
और पाँव पाप के लिए उठेंगे
मुख केवल भक्षण के लिए
और तन केवल शोषण के लिये
मस्तिष्क योजनाएं बनाएगा
विनाश का
और स्वप्न देखेगा प्रकाश का।
कभी कभी मुस्कान का होगा इसे
आभास
जब कोई सुन्दरता होगी पास
इस युग का सबसे बड़ा होगा
यह संताप,
क्योंकि तीन पगों में यह
लेगा सारा देश नाप।

□

"कुम्हार"

यह तूने कैसा घड़ा बनाया
इसमें तो अनेक छेद हैं
क्या तू चाहता है कि मै प्यासा ही रहूँ।
दूसरा घड़ा
यह तो बड़ा गन्दा है।
वर्षो का कूड़ा करकट,
सड़े गले संस्कारों के कीड़े मकोड़े
इसका जल भी पीने योग्य न होगा
अन्ततः एक सुन्दर घड़ा मुझे दिख गया
और उसे मैं क्रय करके ले आया।
पर दुर्भाग्य ऐसा कि
तुलसी के बिरवे के पास ऑगन में
उल्टा रख दिया।
रात भर वर्षा होती रही
पर मेरा घड़ा खाली का खाली रहा
और मैं प्यासा का प्यासा रहा।
हे ईश्वर मुझे पात्रता दे कि
मैं अपना घड़ा सीधा रख सकूं
और तेरी बरसात में लबालब घड़ा भर कर
अपनी प्यास बुझाऊँ
और तृप्त हो तेरा गुण गाऊँ।

□

"शतरज"

चलते रहोगे कब तक टेढ़ी चाल
इस बिसात पर।
और यह तुम्हारे हाथी घोड़े,
बलबलाते ऊँट
आन्दोलित करते रहेंगे जन-मानस को
और गैंदते रहेंगे,
काठ का मोहरा समझ कर
हर इन्सान को।

× × ×

यह दो जिह्वाधारी जीव
तुम्हारा वज़ीर
जिसका कद तुमने
अपने से भी ऊँचा कर रखा है
बन चुका है, कुशासन का प्रतीक
और अय्यारी की बैसाखी पर चलकर
तुम्हें ले जा रहा है
उस सलीब की ओर
जिस पर
हर युग का सत्य लटकाया गया है
और हुई है, पानी की जगह,
खून की बरसात।

× × ×

यह काठ के प्यादे
रिश्वत के दलदल में फँसे
पूरे बिसात पर निरंकुश
ताने बाने बुन रहे है
और खड़े हैं मदमस्त
मुक्तामणि मिलने की प्रतीक्षा में

क्या तुम यह भी नहा जानते
कि चेतक के वंशज, यह तुम्हारे घोड़े
उन्माद में
खाली पीठ रहने का संकल्प ले चुके हैं
और हर सवार, दूर खड़ा
निरीह आँखों से देख रहा है
कब, कहाँ और किसे कुचलेंगे।

× × ×

कहाँ खो गया है तुम्हारा विवेक
जो कभी था तुम्हारे पौरुष का प्रतीक
क्या तुम्हें यह भी ज्ञात नहीं
कि चन्दखानो मे सीमित हो चुकी है
तुम्हारी जिन्दगी।
और तुम घिर चुके हो
निरंकुश और चाटुकारों की फौज से
जिसे तुम आज तक अपनी ताकत समझ रहे हो।

× × ×

क्या तुम्हारी रक्षा कर पायेंगे यह काठ के प्यादे
या यह नपुंसक वज़ीर
समय रहते अपने आप को पहचानो
यदि हो सके तो अब भी सब सँभालो
वरना होगी तुम्हारी "शह"
और कोई ताकत नहीं बचा सकेगी
तुम्हारी "मात"।

□

कविता

जब दीपक की लौ धीमी पड़ने लगती है
तो रात और घनी हो जाती है
पर अन्धकार का क्या
वह तो सब कुछ लाँघ कर
बढ़ने का प्रयास करता है
उस किरण की ओर
जो प्रातः उतरने वाली है
गुलाबी आकाश से
ताकी वह भी ज्योतिर्मय होकर
सार्थक करे अपने जीवन को।
रात और दिन निरंतर इसी दौड़ में लगे है
कि डूबती और उगती किरणों
को समेट कर सार्थक कर लें
अपनी परिभाषा।
पर मानव
सोना त्याग, कोयले के पीछे ही
भागता जा रहा है
यदि उन बीतते क्षणों से पूछो
तो यह गवाही देंगे कि
आज तुमने क्या खोया और क्या पाया।
फूलों के झुरमुटों से तथा
पवन झकोरों से यदि तुम पूछो
बादलों से झरती करुणा को परखो
तो तुम्हें भी जीवन की एक दिशा एक परिभाषा
मिलेगी,
और अबोध अवचेतन की तरह तुम भी
ज्योतिर्मय में विलीन हो जाओगे।

□

"कविता"

यही वह घर है
जिसे हम दोनों ने बनाया था
सजाया था और लिख दिया था,
"प्यार का घर"।
और आस्थाओं के प्रतीक
रख लिया था,
कहीं गीता कहीं पुराण,
कहीं बाइबल, कहीं कुरान
कोने भर दिये थे मूर्तियाँ सजा
कहीं राम, कहीं कृष्ण
कहीं बुद्ध, कहीं क्राईस्ट
सूर, तुलसी, मीरा
और जो स्थान रिक्त
वहाँ भर दिये सिद्धान्त, नियम, व्रत
संयम, उपवास
किन्तु अब छोटे से घर में
न कोई स्थान "विश्राम" का
न शान्त व मौन कुछ क्षण बिताने की जगह
सारे खिड़की सारे दरवाजे बन्द तो बन्द
चलना दुर्लभ, बोझ से दबे हम असहाय
अन्ततः ऊबकर
सब दान कर दिया मंदिर, मस्जिद गुरूद्वारों को
और खोल दिया खिड़कियों, दरवाजों को
और आवाहन करते है सूर्य की पहली किरण का
बच्चो की किलकारी का
और अहोभाव से भर, उसकी कृपा से
जी रहे हैं।

□

'स्वप्न'

यह सच है कि स्वप्न झूठे होते हैं।
सुबह हो या शाम,
गति हो या विराम
हर पल, हर क्षण
इसी का रस पीते हैं,
और नींद में हो अथवा जागरण
हम इसी में जीते हैं,
अटूट है
हमारा उससे प्यार
और यही झूठ बन गया है –
जीवन का आधार।
स्वप्न कभी अतीत में ले जाता है
कभी भविष्य की कल्पना कराता है
कितने मोहक क्षण
खींच खींच कर लाता है
और जाल में फंसे हम
मन को बहलाते हैं
और झूठ की मृगमरीचिका में फँस
भागते भागते थक जाते हैं।
पर यह दोनों नहीं हैं अपने
यह हैं मात्र सपने
यथार्थ
तो बस 'आज' है
पर यथार्थ कटु होता है
इसी लिए आदमी झूँठ ढोता है
पर वर्तमान में जीना
स्थिरता की सृष्टि करता है।

तथा भूत व भविष्य म पेग भरते
झुले से उतार –
ले चलता है उस जगह
जहाँ एक अलाव जल रहा है
और है कमाल की शान्ति।

□

(कविता)

एक चिड़िया उड़ के आयी फिर तुम्हारे द्वार–
शायद आज बादल आ रहे हैं
सरसराती हवा नाची फिर तुम्हारे द्वार
शायद आज बादल आ रहे हैं
मन का उत्पीड़न, तृष्णा, मिट जाय शायद
मन की परतें लगी खुलने हैं पुनः एक बार
शायद बादल आ रहे हैं।
गाँव उसके ही हैं जाने लगगयी सारी दिशाएं
दूर पायल की उठी रह रह के फिर झंकार –
शायद आज बादल आ रहे हैं
ओ प्रतीची
मौन रह, कब तक यहाँ जलती रहेगी
एक पल घूँघट उठा के –
करले तू मनुहार,
शायद आज बादल आ रहे हैं
भूल जाना है सरल संसार में कोई, किसी को–
एक पल करके समपर्ण –
देख ले तू यार,
शायद आज बादल आ रहे हैं।
छोड़कर सारे बखेड़े,
एक पल अन्तर की सुन
बैठकर चुपचाप, गाता जा
मधुर मल्हार
शायद आज बादल आ रहे हैं।

□

"मेरी बेटी"

क्या बात करते हो, यार तुम चिरौंठे
दूध मेरी बिटिया ने अभी-अभी पिया है
मम्मी के नरम नरम कोमल से आँचल में,
रात भर
सपनों की दुनिया में जिया है।
क्या बात करते हो यार तुम चिरौंठे.........
दूध मेरी बिटिया ने अभी अभी पिया है
यह सच है,
कुछ बरतन हाथों से छूट गये
कुछ काले कलमुँहे,
शीशे भी टूट गये,
किन्तु अपनी तुतलाती–
मीठी सी बोली से,
जीवन की फटी हुई चादर को सिया है।
क्या बात करते हो.............
गिन गिनकर कितने सामान इसने जोड़ा है
कुछ बन्दर, भालू और हाथी भी तोड़ा है
ठुमुक-ठुमुक कमरे में घूम रही पुरवा सी
आँगन में खड़े-खड़े,
गुब्बारे छोड़ा है
किलकारी मार, अपनी भोली सी चितवन से
मम्मी और डैडी को और निकट किया है
क्या बात करते हो.............
छोटा सा घर आँगन,
चुटकी भर रोली
चेहरे पर अपने ही,
रच रही रंगोली
चूड़ी, बिंदिया, पायल

हाथ मे छिपाये
गुड्डे को अपने है माला पहनाये।
दादी के माथे पर दवा लगा दिया है
क्या बात करते हो यार.................
चाचा व चाची के नयनों की तारा यह
दादा व दादी की रसवन्ती-धारा यह
नाना न नानी के प्रेम की जुन्हैया
फुदक रही आँगन में,
जैसे गौरेया
कितने ही भावुक क्षण घर भर को दिया है
क्या बात करते हो यार तुम चिरौंटे
दूध मेरी बिटिया ने अभी अभी पिया है।

□

(राजपथ)

कुनकुनाती भोर में
हँसता हुआ यह राजपथ
धूल माथे पर चढ़ाता
झूमता यह राजपथ
स्वर्ग से आँखें मिलाता
जिन्दगी पल पल बिछाता
गीत गाता राजपथ
आज इसके भाग्य की तुलना नहीं है
यह बताता जिन्दगी छलना नहीं है
जो चला इस पर अडिग विश्वास लेकर
वह बढ़ा आगे उसे मुड़ना नहीं है
पर इसे क्या ज्ञात,
इसकी शान को
देश के सम्मान, गौरव ज्ञान को
बेचने को कुछ धूर्त इस पर आगये
सत्य व निष्ठा की चादर ओढ़कर
देश द्रोही छद्म रूपी छा गये
पर न समझो
यह नहीं कुछ देखता
मौन क्यों है
क्यों नहीं कुछ बोलता
किन्तु वह दिन शीघ्र ही आजायेगा
धूर्त जो नेता बने उनपर कहर छा जायेगा।

□

(शान्ता क्लाज)

एक बूढ़ा सन्त,
जिसकी धवल दाढ़ी
श्वेत सारे केश
तन पर "फर" लेपेटे
शीश लम्बी एक टोपी
हीलते हाथों में कुछ लेकर
हमारे स्वप्न में कल आ गया।
और मेरी कामना का वृक्ष
'क्रिसमस ट्री' की डालों पर
कुछ अचानक बाँध
अन्तरध्यान, तत्क्षण हो गया।
जब मेरी आँखें खुलीं प्रातः
तो देखा
प्रथम पैकेट में लिखा था "सत्य"
दूसरी पर था "अहिंसा"
और फिर था "प्रेम", फिर "सद्भाव", "सेवा"
मैंने सोचा,
कल मदर मरियम के जो दर्शन किये थे
और पूजा था उन्हें
पाषाण की प्रतिमा जहाँ थी
है कदाचित फल उसी का
जो मुझे यह "फल" मिले है
एक क्षण हो मौन
आभार से भर, प्रार्थना मैंने किया फिर
तुरत मेरे मन में आया
क्या करूंगा ले के मैं "उपहार" इतने
टांग दूँ दुकान पर शायद इसे कोई खरीदे

पर न आया आज तक
कोई भी ग्राहक
और अब तो हो रही है शाम
यह दुकान उठने जा रही है।

□

(नववर्ष,

फूलों से भरी डाली
चन्द खुशियाँ, कुछ सपने
लाया हूँ मित्र
तुम्हारे लिए
नववर्ष के उपहार में
यह मत पूँछना कि इनकी सार्थकता क्या है?
क्योंकि कुछ शब्द होते हैं
ऐसे अवसरों पर दिखाने और फिर
जेब में रखने के लिए
फिर भी यदि तुम जानना चाहते हो
तो सुनो
फूलों से भरी डाली का अर्थ है
"शूलों में जियो और फूलों की सोचो"
चन्द खुशियों का मतलब है केवल "खोखली हंसी"
और सपनों का अर्थ है "जो कुछ भी नहीं"
वह युग गया जब
आशीर्वादों, शापों के अर्थ होते थे
अब न प्रभाव है न परवाह है
अरे तुम क्या सोचने लगे
क्या तुम्हें आज भी
भीष्म की प्रतिज्ञा
अर्जुन के संकल्प
अनसुइया के आशिर्वादों की
यादें आने लगीं?
ऐसा मत सोचना
अब मंगल कामनाएं केवल
मंगल के दिन तक ही सीमित है
आगे, पीछे कुछ नहीं।

आज का वही मंगल दिन है
जब "शब्द" एक दूसरे पर फेंके
और एक कप चाय पीकर
कल से फिर
कोल्हू के बैल की तरह जियें।

□

(कविता)

एक विस्फोट
फिर धमाका
और आग लिखने लगी नयी लिपि
आकाश पर
जिसे पढ़ना सरल न था
क्योंकि उसमें थे चन्दनाम
उन लोगों के जो दो पंक्तियों में खड़े हैं
तलवार खींचे
सिर्फ बिगुल बजाने की प्रतीक्षा है।
पर बिगुल धारियों होशियार
क्योंकि हिमालय के उस पार मौसम खराब है और
बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक का पानी उबल रहा है
यदि तुम्हें कुछ बजाना ही है –
तो शान्ति का शंख बजाओ
दुखी को गले लगाओ
सौहार्द्र की मशाल जलाओ,
वरना बचा हुआ तन फिर कतरा जायेगा
और लाश के अक्षरों से नया इतिहास लिखा जायेगा
होशियार, खबरदार।

□

(ग़ज़ल)

तुमने जब आँख से तिनके निकाले
तबसे जाने क्या मुझे होने लगा है।

गन्ध में डूबा हुआ यह मन अकिंचन
आजकल पहचान भी खोने लगा है।

यह नहीं परिकल्पना है सत्य केवल
फिर भी मन क्यों भार सा ढोने लगा है।

टीस सी अब बो रही मुस्कान तेरी
क्या कहीं अपराध सा होने लगा है।।

हर तरफ़ अरुणिम-अधर आँखों का काजल
केश बिखरता कोई छाने लगा है।

यह फसल अंगड़ाइयों की क्यों उगी
क्या उनींदा सा कोई होने लगा है।।

बाँह के घेरे में कुछ होने का भ्रम
एक जादू सा मुझे छूने लगा है

क्षीण सा सोने ढ़ला यह रूप तेरा
धुन्ध से माहौल में खोने लगा है।

□

गजल

ये मन्दिर बन सके। या न बने लेकिन
तुम्हारे नाम का दीपक सदा जलता रहेगा

ये गौधूली और खामोश मौसम
मगर अन्तर में कोई तार बजता ही रहेगा

लहर, सागर की आकर धो रही है पॉव तेरे
हिमालय भी तुम्हारे सामने झुकता रहेगा

शपथ लेने लगे हैं लोग तेरा नाम लेकर
यही दस्तूर भौंरों में सदा चलता रहेगा

मधुर मुस्कान ने जो आग सीने में लगाई है
उसी के ताप से यह प्यार पलता ही रहेगा

बहुत आते हो मुझको याद तुम एकान्त के क्षण मे
कहीं जाकर छिपो, संवाद चलता ही रहेगा।

□

(ग़ज़ल)

बदहवासी में भटकते, जब उधर जाने लगे
सत्य मानों, हम वहीं से होश में आने लगे

शून्य का विस्तार आधी रात को ऐसे हुआ
जब गिरे आँसू इधर, तारे उधर जाने लगे

वक्त की दीवार में इतना तो संवेदन न था
सर जो टकराऊँ तो मेरे घाव सहलाने लगे।

सत्य है कि कुछ गलतियाँ मैंने भी की तुमने भी की
किन्तु यह क्या हम मिले फिर मिल के शरमाने लगे

दर्द के उद्वेग में डूबे बहुत, उबरे बहुत
किन्तु इसको जानकर क्यों आप घबराने लगे

मिट गयी संज्ञा मेरी, सारे विशेषण गिर गये
प्यार की मिज़राब से जब तार सहलाने लगे

पत्तियां अब भी हरी हैं पेड़ अब भी है जवान
शाम आता देख क्यों पंछी यह उड़ जाने लगे

आज किस किस से कहूँ बदले हुए मौसम की बात
गैर तो सब गैर हैं, अपने भी तज जाने लगे।

□

गजल

जग दिखाई करने आये थे वे करके चल दिये।
अपनी पीड़ा को दबा कर हम वहीं बैठे रह गये।।

उम्र में मुझसे कहा इस बोझ को फेकों तुरत।
किन्तु गठरी बाँध हम सर पर उठाये रह गये।।

हार की और जीत की लहरें उठी, सुख दुख बहे।
किन्तु हम बस भाग्य की वंशी लगाए रह गये।।

अनगिनत नदियां हैं, सागर हैं असंख्यों जल प्रपात।
किन्तु हम मझधार में भी बिन नहाये रह गये।।

स्वप्न था बस स्वप्न सा वह आज मेरे स्वप्न में।
किन्तु हम अपना समझ, मन मे छिपाये रह गये।।

पुण्य की धरती है यह, वरदान हैं बँटते यहाँ।
फिर भी कुछ गलियों में हम बादल छिपाये रह गये।

□

(ग़ज़ल)

दूसरी किश्त आ गयी होगी
बात पिछली बदल गयी होगी।
किससे, किससे गवाहियाँ लोगे
जिंदगी खुद पलट गयी होगी।।

धूप ने घर बना लिया होगा
चाँदनी लौटी जा रही होगी।
नयनों के बाण जो नुकीले थे
उनकी गर्मी पिघल गयी होगी।।

उनका दर्पण बहुत सजीला था
उस पर कुछ धूल पड़ गयी होगी।
जिसके फूलों में था पराग बहुत
उससे तितली भी उड़ गयी होगी।।

जिसके कुन्तल में घटा बसती थी
उस पर कुछ बर्फ पड़ गयी होगी।
स्वप्न आधे अधूरे से रह गये होगें
आँख से नींद उड़ गयी होगी।।

□